



CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF-5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th April 2021, Revised on 26th April 2021, Accepted 27th April 2021

आलेख

बाह्य एवं आन्तरिक शान्ति हेतु गाँधी जी द्वारा सुझाए गए माध्यम

* डॉ. मीना नागदा
सहायक आचार्य

माणिक्य लाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर

Email-meenanagda15@gmail.com, Mob. -9001787622

मुख्य शब्द— अहिंसात्मक साधन, नकारात्मक विचार, आन्तरिक भ्रान्ति, अन्तर्मन की साफ-सफाई आदि।

सार संक्षेप

“व्यक्ति अपने विचारों के सिवाय कुछ नहीं है। वह जो सोचता है, वहीं बन जाता है।”

गाँधी जी के उक्त विचारों का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति अपने मन को जितना स्थिर रखेगा उतना ही उसका मन शान्त रहेगा क्योंकि शान्ति वह अवस्था है जो चिन्ता मुक्त हो जिसमें व्यक्ति भावात्मक एवं मानसिक रूप से शान्त हो, जहाँ नकारात्मक विचार, तनाव, परेशानी पैदा करने वाले कारक न हों। व्यक्ति जिस तरह के विचार अपने हृदय में लाता है वह जीवन भर उन विचारों को आधार मानकर कार्य करता है। शान्त होने का अर्थ है कि मन की वह अवस्था जहाँ केवल सकारात्मक विचार, विश्वास, आन्तरिक मजबूती और खुशियों का प्रवाह हो और कठिन तथा पीड़ादायक स्थितियों में अपने ऊपर नियंत्रण हो। इन्हीं सब गुणों को महात्मा गाँधी ने अपनाया और अपने जीवन को चरितार्थ किया था।

भूमिका

महात्मा गाँधी किसी भी समस्या में उसका सकारात्मक रूप देखते थे और उसके निदान के लिए अहिंसात्मक साधनों को अपनाने पर बल देते थे। उन्होंने अपना समस्त जीवन सत्य और सत्य की खोज में व्यतीत किया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी स्वयं की गलतियों और खुद पर प्रयोग करते हुए सीखने की कोशिश की। गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' सन् 1927 ई. में प्रकाशित हुई। साढ़े तीन वर्ष के अन्दर इसकी तीन लाख प्रतियाँ बिक गईं। इस आत्मकथा का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। गाँधी जी ने कहा है कि सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई लड़ने के लिए अपनी दुष्टात्मा, भय और असुरक्षा जैसे तत्वों पर विजय पाना आवश्यक है। उन्होंने कहा 'भगवान ही सत्य है बाद में इसे 'सत्य ही भगवान है' में बदल दिया। आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने के लिए सच्चाई को स्वीकारना और उस पर विश्वास रखना आवश्यक है। जीवन में जो भी कार्य करें उसे अपना श्रेष्ठ देकर करे यकीनन उससे खुशी, विश्वास, आन्तरिक शान्ति और मजबूती प्राप्त होती है।

गाँधी जी का जन्म हिन्दू धर्म में हुआ उनके जीवन के अधिकतर सिद्धान्तों की उत्पत्ति हिन्दुत्व से हुई। लेकिन वे सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते थे। उनका मानना था कि मनुष्य चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो लेकिन वह अपने धर्म पर

विश्वास रखे और उसके मार्ग की ओर अग्रसर होता रहे । धर्म परिवर्तन में उनकी रुचि नहीं थी बल्कि वे चाहते थे मनुष्य जो भी धर्म अपनाये अनुशासन का पूरा ध्यान रख कर अपनाये, क्योंकि जीवन में अनुशासन को अपनाने से आन्तरिक शान्ति प्राप्त होती है। अनुशासनिक व्यवहार की सहायता से व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों का सामना करने के योग्य बन जाता है। जिससे वह शान्ति एवं सुख की प्राप्ति करता है। इसके साथ किसी अन्य व्यक्ति से उम्मीद न रखना आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है क्योंकि दूसरों से उम्मीद रखना मनुष्य के जीवन को खोखला कर देती है। और अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थता महसूस करता है अतः उसे स्वयं उसे पाने की कोशिश करनी चाहिए।

गाँधी जी का मानना था कि अगर व्यक्ति समाज सेवा में कार्य करना चाहता है तो उसे साधारण जीवन की तरफ बढ़ना चाहिए जिसके लिए वे सादगी और ब्रह्मचर्य आवश्यक मानते थे। गाँधी जी स्वयं सप्ताह में एक दिन मौन धारण करते थे उनका मानना था कि बोलने से परहेज से उन्हें आन्तरिक शान्ति मिलती है जब वे मौन रखते थे उस दिन का समस्त कार्य लिखकर करते थे। उनका कहना था कि आज जगत की जो भी स्थिर अवस्था है उसने उसे अपनी स्वयं की आन्तरिक शान्ति की तुलना में अधिक भ्रमित किया है। जिसके लिए अन्तर्मन की साफ-सफाई होनी चाहिए जो कि एक बेहद निजी मसला है। छल-कपट, धूर्तता, हिंसा, कलूष, भ्रष्टाचार, हिंसात्मक आन्दोलन जैसे तमाम आन्तरिक भावों को छोड़ने के लिए हम सबको किसी सरकार की बैसाखी की जरूरत नहीं है वरन् एक दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है जिसके लिए हमें सादगी पूर्ण जीवन शैली को अपनाना होगा। महात्मा गाँधी ने स्वयं जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दी लास्ट' पढ़ने के बाद अपने जीवन शैली में परिवर्तन करने का फैसला किया तथा एक समुदाय का निर्माण किया जो उनके तौर तरीको को अपना सके।

गाँधी जी का भगवद्गीता में पूर्ण विश्वास था वे जब कभी असमंजस की स्थिति में होते तब वे भगवद्गीता की शरण में जाते और उसके श्लोकों को पढ़ते और फिर से आशावादी बन जाते उनका मानना था कि ऐसा एक भी धर्म नहीं है कि जिसे गीता न सुलझा सकती हो हमारी अल्प श्रद्धा के कारण हमें उसका पढ़ना-लिखना समझना न आए तो वह दूसरी बात है। गाँधी जी का विश्वास था कि जो मनुष्य गीता का भक्त हो जाता है उसे निराशा नहीं घेरती, वह हमेशा आनन्द में रहता है। इसलिए उन्होंने गीता का गुजराती भाषा में अनुवाद भी किया। उनका मानना था कि प्रत्येक धर्म के मूल में सत्य और प्रेम होता है। यही सत्य और प्रेम मानव जीवन का आधार है जिस दिन मनुष्य इस आधार से डगमगायेगा उस दिन उसका जीवन नष्ट हो जाएगा। इसलिए गाँधी जी ने मानव को जीवन में संयम, सादगी और ब्रह्मचर्य अपनाने के लिए प्रेरित किया और साथ ही धर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास रखने का सुझाव दिया जिसके माध्यम से मन में उठने वाले अन्तर्विरोधों को दूर करके अन्तर्मन को शान्त किया जा सकता है। उन्होंने अपने असाधारण कार्यों एवं अहिंसावादी विचारों से पूरे विश्व की सोच बदल दी। आजादी एवं शान्ति की स्थापना ही उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य था। गाँधी जी द्वारा स्वतंत्रता और शान्ति के लिए शुरू की गई इस लड़ाई ने भारत और दक्षिणी अफ्रीका में कई ऐतिहासिक आन्दोलनों को एक नई दिशा प्रदान की।

महात्मा गाँधी और टैगोर वैश्विक शान्ति का समर्थन करते थे। स्थायी शान्ति की स्थापना मानवता के नैतिक और बौद्धिक एकजुटता के आधार पर ही की जा सकती है। केवल राजनीतिक और आर्थिक समझौतों से स्थायी शान्ति स्थापित नहीं होगी। शान्ति की स्थापना इस आधार पर की जानी चाहिए कि पूरी मानवता एक है। आज विश्व शान्ति सम्पूर्ण विश्व की प्रमुख समस्या बन चुकी है। इसके लिए समय-समय पर अनेक धर्म ग्रन्थों जैसे-जैन धर्म, बौद्ध धर्म, इसाई धर्म और अनेक धर्म गुरुओं ने एक ही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया वह है-अहिंसा! अर्थात् हिंसा न करना। इसका व्यापक अर्थ है-किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। मन में किसी को कटुवाणी आदि के द्वारा भी नुकसान न देना तथा कर्म से किसी भी अवस्था में किसी भी प्राणी की हिंसा न करना यह अहिंसा है। गाँधी जी भी अहिंसक जीवन एवं सद्भावपूर्ण व्यवहार के प्रति प्रतिबद्ध थे। उनका मत था कि यही विश्व संस्कृति और विश्व मानवता की आधारशिला बन सकते हैं। अहिंसा की भावना पर आधारित विश्व शान्ति की प्रासंगिकता, सार्थकता एवं प्रयोजनशीलता स्वयंसिद्ध है। इसके लिए उन्होंने कहा कि सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखना चाहिए। आज मानव मानसिक अशान्ति के चक्रव्यूह में फंसा हुआ है। भौतिक पदार्थों के अधिकाधिक उपभोग की

तरफ बढ़ता ही जा रहा है। इसके लिए वह प्राकृतिक वस्तुओं के दोहन में लगा हुआ है। उसकी उपभोग प्रवृत्ति भी बढ़ती ही जा रही है। जिस कारण आन्तरिक अशान्ति का ग्रास बनता जा रहा है। इसी कारण से विश्व में बाह्य शान्ति को खतरा बना हुआ है।

गाँधी जी ने दुनिया को दर्शाया कि सत्याग्रह या सत्य की शक्ति और अहिंसा के जरिए दुनिया को और भी अधिक उचित बनाया जा सकता है। गाँधी जी ने दक्षिणी अफ्रीका में हिंसा के विरुद्ध सत्य के उपयोग के साथ अपने प्रयोगों की शुरुआत की। फिर भारत में शान्ति आन्दोलन के रूप में विकसित किया जिसे दुनिया ने कभी नहीं देखा था। इस आन्दोलन से न केवल भारत को स्वतंत्रता मिली बल्कि दुनिया भर में उपनिवेशवाद के अन्त की शुरुआत हुई। आज विश्व शान्ति सभी देशों और लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शान्ति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शान्ति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन प्रणाली के माध्यम से इसे अपनाने का प्रयास करते हैं। गाँधी जी मानते थे कि अहिंसक राज्य में पुलिस बल की जरूरत अनिवार्य हो सकती है लेकिन उनका गठन अहिंसा में विश्वास रखने वालों से किया जाएगा। लोग उनकी असंभव मदद करेंगे और आपसी सहयोग के माध्यम से वे किसी भी उपद्रव का आसानी से सामना कर लेंगे। आज एक देश की अथवा दुनिया के एक क्षेत्र की शान्ति का विचार अब अप्रासंगिक हो गया है। किसी देश अथवा क्षेत्र की सीमाओं में शान्ति अथवा संघर्ष को प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। आज सम्पूर्ण पृथ्वी के अस्तित्व और अनास्तित्व के बीच किसी एक का चयन करना है। विश्व शान्ति एवं हम सबकी सत्ता अन्योन्याश्रित है।

गाँधी जी द्वारा दिए गए सच्चाई, खुलापन और अहिंसा के विचार असहिष्णुता, कट्टरता और आतंकवाद के साथ सामना कर रही दुनिया के लिए आगे का सबसे अच्छा मार्ग प्रदान करते हैं। अहिंसा के माध्यम से गाँधी ने विश्व को संदेश दिया कि जीवन के इस नियम के अनुसार चलकर एक अकेला आदमी भी सम्मान, धर्म और आत्मा की रक्षा के लिए साम्राज्य के सम्पूर्ण बल को चुनौती दे सकता है। गाँधी के इन विचारों से विश्व की महान विभूतियों ने स्वयं को प्रभावित बताया। आज भी उनके विचार विश्व को उत्प्रेरित कर रहे हैं। ऐसे समय में जब पूरे विश्व में हिंसा का बोलबाला है, राष्ट्र आपस में उलझ रहे हैं, मानवता खतरे में है, गरीबी, भूखमरी और कुपोषण लोगों को लील रही है तो गाँधी के विचार बरबस प्रासंगिक हो जाते हैं। अब विश्व महसूस भी करने लगा है कि गाँधी के बताए रास्ते पर चलकर ही विश्व को नैराश्य, द्वेष और प्रतिहिंसा से बचाया जा सकता है। अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, सोमालिया समेत दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जारी युद्ध संघर्ष और हिंसा के बीच विशेषज्ञों का मानना है कि आज भी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की अहिंसा और सत्याग्रह की नीतियां बेहद प्रासंगिक हैं और सिर्फ इन्हीं की अलख जगाकर विश्व शान्ति कायम की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गाँधी महात्मा, *सत्य के प्रयोग एवं आत्मकथा, नवजीवन*, प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 1947
2. सक्सेना वन्दना, *गाँधी जीवन और दर्शन*, बी आर पब्लिशर्स
3. गाँधी महात्मा, *गीता माता*, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, 2008 (भारतीय साहित्य संग्रह का अद्वितीय संकलन)
4. वर्मा डॉ वेद प्रकाश, *महात्मा गाँधी का नैतिक दर्शन*, इन्दु प्रकाशन नई दिल्ली 1979
5. कुसवाहा रेणु कुमारी, *गाँधी दर्शन के 5 सूत्र*, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण
6. चौधरी रामनारायण, देआसी प्रभुदास, *राजाराम मोहन से गाँधी जी तक*, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
7. सक्सेना प्रेम, शर्मा वेद, *यदि गाँधी शिक्षक होते*, चिन्मय प्रकाशन जयपुर 1969, (राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों का निबन्ध संग्रह)
8. जैन सरन महावीर, *गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता*, सेवा निवृत्त निदेशक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
9. *समकालीन जीवन दर्शन एवं गाँधी दर्शन*
10. गाँधी दर्शन एवं विश्व शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना

* Corresponding Author

डॉ. मीना नागदा, सहायक आचार्य

माणिक्य लाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर

Email-meenanagda15@gmail.com, Mob. -9001787622